अध्याय 6

शत्रुओं की पराजय और शहरपनाह का पूरा होना

इस अध्याय में, यरूशलेम की शहरपनाह का पुनर्निर्माण कार्य अपने उत्कर्ष तक पहुँच जाता है। नहेम्याह उन समस्याओं की ओर लौट आया जो यहूदा के अन्यजातीय शत्रुओं के द्वारा उत्पन्न हुई थीं। शारीरिक धमकियों के द्वारा यहूदियों को डराने के उनके प्रयास में विफल होने के बाद (अध्याय 4), इन विरोधियों ने शहरपनाह के निर्माण को नई युक्तियाँ लगाकर रोकने का प्रयास किया। यहूदा के विरोधियों के दो षड्यंत्रों का वर्णन 6:1-14 में किया गया है। यहूदियों को शहरपनाह को पूरा करने से रोकने के उनके उद्देश्य के अलावा, इन षड्यंत्रों में अन्य समानताएं थीं: दोनों में छल सम्मिलित थे, और दोनों का उद्देश्य नहेम्याह को डराना या धमकाना था। हालाँकि, उनके झूठ से उसने धोखा नहीं खाया। उसने काम जारी रखा, और शहरपनाह पूरी हो गई। अध्याय इस दुख की बात के साथ समाप्त होता है कि यहूदियों में से कुछ यहूदा के शत्रुओं में से एक तोबियाह के मित्र थे।

पहला षड्यंत्र: "निकल आ और अपने शत्रुओं से सम्मति कर" (6:1-9)

[1]जब सम्बल्लत, तोबियाह और अरबी गेशेम और हमारे अन्य शत्रुओं को यह समाचार मिला, कि मैं शहरपनाह को बनवा चुका; और यद्यपि उस समय तक भी मैं फाटकों में पल्ले न लगा चुका था, तौभी शहरपनाह में कोई दरार न रह गई थी। [2]तब सम्बल्लत और गेशेम ने मेरे पास यों कहला भेजा, "आ, हम ओनो के मैदान के किसी गाँव में एक दूसरे से भेंट करें।" परन्तु वे मेरी हानि करने की इच्छा करते थे। [3]परन्तु मैं ने उनके पास दूतों से कहला भेजा, "मैं तो भारी काम में लगा हूँ, वहाँ नहीं जा सकता; मेरे इसे छोड़कर तुम्हारे पास जाने से वह काम क्यों बन्द रहे?" [4]फिर उन्होंने चार बार मेरे पास वैसी ही बात कहला भेजी, और मैं ने उनको वैसा ही उत्तर दिया। [5]तब पाँचवीं बार सम्बल्लत ने अपने सेवक को खुली हुई चिट्ठी देकर मेरे पास भेजा, [6]जिस में यों लिखा था, "जाति-जाति के लोगों में यह कहा जाता है, और गेशेम भी यही बात कहता है,

कि तुम्हारी और यहूदियों की मनसा बलवा करने की है, और इस कारण तू उस शहरपनाह को बनवाता है; और तू इन बातों के अनुसार उनका राजा बनना चाहता है। 7तू ने यरूशलेम में नबी ठहराए हैं, जो यह कहकर तेरे विषय प्रचार करें, कि यहूदियों में एक राजा है। अब ऐसा ही समाचार राजा को दिया जाएगा। इसलिये अब आ, हम एक साथ सम्मति करें।" 8तब मैं ने उसके पास कहला भेजा, "जैसा तू कहता है, वैसा तो कुछ भी नहीं हुआ, तू ये बातें अपने मन से गढ़ता है।" 9वे सब लोग यह सोचकर हमें डराना चाहते थे, "उनके हाथ ढीले पड़ें, और काम बन्द हो जाए।" परन्तु अब हे परमेश्वर, तू मुझे हियाव दे।

आयत 1. यहूदा के शत्रु अब तक खीझ चुके थे। उन शत्रुओं के प्रधान **सम्बल्लत, तोबियाह और अरबी गेशेम** थे। सम्बल्लत सामरियों का अधिपति था, तोबियाह अम्मोनियों का एक अधिकारी था, और गेशेम अरबियों का शासक था। **हमारे अन्य शत्रुओं** में 4:7 में वर्णन किए गए "अशदोदी" सम्मिलित रहे। 6:2 में केवल सम्बल्लत और गेशेम का उल्लेख किया गया है। हालाँकि, तोबियाह को निस्संदेह इस षड्यंत्र के विषय में पता था, परन्तु "ओनो के मैदान" में मिलने का निमंत्रण स्पष्ट रूप से अन्य दो पुरुषों की ओर से आया था। उन्होंने यहूदियों के विरुद्ध एक हिंसक सैन्य आक्रमण की धमकी दी थी, परन्तु नहेम्याह की रक्षात्मक योजना के द्वारा इससे बचाव हो गया था (4:1-23)।

पुनर्निर्माण का एकमात्र कार्य जो बचा था वह **फाटकों में पल्ले** लगाने का था। जब शत्रुओं ने यह समाचार सुना कि पुनर्निर्माण लगभग पूरा हो चुका था, तो उन्होंने एक और षड्यंत्र रचा। यह सीधे नहेम्याह पर केन्द्रित था। उन्होंने सम्मति की और कहा कि यदि हम यहूदी प्रधान को उखाड़ फेंके, तो काम रुक जाएगा।

आयत 2. प्रश्न यह था कि किस प्रकार इस समस्या उत्पन्न करने वाले यहूदी को दूर करें। उनका पहला विचार उसे फुसलाकर नगर के बाहर बुलाना था, जहाँ वह पकड़े जाने के जोखिम में रहेगा। उनकी मंशा शायद उसकी हत्या करने की थी। उनकी योजना को कार्य में लाने के लिए उन्होंने नहेम्याह को एक **संदेश कहला भेजा**, जिसमें उसे **ओनो के मैदान के किसी गाँव में एक दूसरे से भेंट** करने का निमंत्रण दिया गया था।

"ओनो के मैदान" को यरूशलेम के उत्तर-पश्चिम में पच्चीस मील दूर माना जाता है,[1] जो सामरिया और अशदोद की सीमा से अधिक दूरी पर नहीं है। लोद (लिद्दा) और हादीद के साथ, ओनो को 720 से अधिक बंधुआई से आए लोगों द्वारा फिर से बसाया गया था जो बेबीलोन की कैद से वापस आ गए थे (एज्रा 2:33; नहेम्याह 7:37; 11:35)। यह "पुनः बसाए गए समाज की पश्चिमतम बस्ती का प्रतिनिधित्व करता है।"[2] स्थान के नाम "कपीरीम" या "हक्कीपीरिम" (NEB; REB; ESV), अन्य संस्करणों में "किसी गाँव में" (KJV; NIV; NRSV; TEV; NLT) हैं।[3]

जैसा कि यहाँ पर वर्णन किया गया है, शत्रुओं की विनती, सामान्य तौर पर यह थी, **"आ हम एक दूसरे से भेंट करें।"** सम्भवतः संदेश ने और भी बहुत कुछ कहा, जैसे-जैसे उन्होंने अतिरिक्त बुलावे भेजे, **सम्बल्लत और गेशेम** ने मिलने के

कारण को और अधिक विशिष्ट बना दिया।

नहेम्याह आरम्भ से ही मूर्ख नहीं बना। हालाँकि उसका यह कथन कि **वे मेरी हानि की इच्छा करते थे** इस तथ्य के बाद कहा गया, निस्संदेह नहेम्याह को उसके शत्रुओं के षड्यंत्र पर आरम्भ से ही संदेह हो गया था।

आयत 3. दूतों के द्वारा सम्बल्लत को भेजा गया नहेम्याह का उत्तर था कि **"मैं तो भारी काम में लगा हूँ, वहाँ नहीं जा सकता।"**[4] नहेम्याह एक महत्वपूर्ण परियोजना में लगा हुआ था जिसे शीघ्रतम पूरा करने की आवश्यकता थी। उसने कहा, यह बुद्धिमानी की बात नहीं होगी कि वह इस काम को स्थगित करके उनसे भेंट करने आए। भेंट के लिए सुझाया गया स्थान यरूशलेम से एक दिन की दूरी पर था; इसलिए, सबसे अच्छा यह है कि, नहेम्याह वहाँ एक दिन यात्रा में बिताए, एक-दो दिन बैठक में और एक दिन वापस यात्रा करे। उनके निमंत्रण को स्वीकार करने का अर्थ होगा कि काम को कई दिनों तक रोकना होगा। नहेम्याह का उत्तर तर्कसंगत था, परन्तु यह शायद निमंत्रण स्वीकार नहीं करने के लिए उसके कारण का केवल एक भाग था। उसे संदेह था कि सम्बल्लत और गेशेम के गुप्त उद्देश्य थे, और उसने स्वयं को उन्हें नहीं सौंपा।

आयत 4. सम्बल्लत ने "न" को उत्तर के रूप में स्वीकार नहीं किया; और उन्होंने **चार बार** अपने निमंत्रण को दोहराया, जिसके परिणाम एक ही रहे। नहेम्याह ने उनसे मिलने के लिए मना कर दिया।

आयत 5. पाँचवीं बार, उन्होंने एक अन्य चाल चली: **एक खुली हुई चिट्ठी**। यह तथ्य कि यह एक "खुली" या "बिना मुहर" (NIV) की चिट्ठी थी दर्शाता है कि इसकी बातें न केवल नहेम्याह, बल्कि यरूशलेम में हर किसी के लिए थी।[5] **सम्बल्लत** के द्वारा भेजी गई यह चिट्ठी, यह निर्दिष्ट करती थी कि नहेम्याह को क्षेत्र के अन्य प्रधानों से क्यों मिलना था।

आयत 6. चिट्ठी में लिखा था कि एक अफवाह फैलाई जा रही है, जिसमें दावा किया जा रहा है कि नहेम्याह बलवा कर रहा है। इसने एक खबर के विषय में बताया, जो **जाति-जाति के लोगों** में फैल रही थी, जो यह थी कि, आसपास रहने वाले लोगों के बीच। सम्भवतः इस खबर की उत्पत्ति, या कम से कम **गेशेम** (गश्मू) के द्वारा पुष्टि की गई थी। "गश्मू" नाम "गेशेम" की एक वैकल्पिक वर्तनी है; यह 6:1, 2 में "अरबी गेशेम" का एक संदर्भ है। खबर थी कि **यहूदी** फारस के विरुद्ध **बलवा** करने की योजना बना रहे थे, और शहरपनाह के पुनर्निर्माण (या नगर के पुनर्निर्माण) का मंशा उस विद्रोह को और बढ़ाना था। एक अन्य आरोप यह था कि, जब शहरपनाह का पुनर्निर्माण किया जा रहा था, तब नहेम्याह यहूदा का **राजा** बनने की योजना बना रहा था।

मार्क ए. ग्रोंटविट ने "हाग्गै (2:21-23) और जकर्याह (3:8; 4:6-10; 6:10-14) की घोषणा के अनुसार, जरुब्बाबेल और यहोशू के सम्बन्ध में, एक सदी पहले की गुप्त राजनीतिक-मसीही आशाओं के पुनरुत्थान की झूठी अफवाहों के माध्यम से नहेम्याह को बदनाम करने का प्रयास करने की बात कही।"[6] हालाँकि, इस बात का कोई संकेत नहीं है कि नहेम्याह दाऊद का वंशज था, इसलिए यह सम्भावना

नहीं है कि यहूदियों ने उससे किसी मसीही राज्य पर दोबारा राज्य करने की इच्छा की होगी।

आयत 7. चिट्ठी में यह भी दावा किया गया था कि नहेम्याह ने **"यरूशलेम में नबी ठहराए हैं, जो यह कहकर तेरे विषय प्रचार करें, कि यहूदियों में एक राजा है!"** सम्बल्लत का आरोप यह संकेत कर सकता है कि उसे इस्राएलियों के इतिहास के विषय में कुछ जानकारी थी। इस्राएल के राजा के अभिषेक करने के लिए निस्संदेह नबी सम्मिलित रहे थे, जिसका आरम्भ शाऊल (1 शमूएल 10:1, 24), दाऊद (1 शमूएल 16:13), और सुलैमान (1 राजा. 1:34) से होता है।[7] इसके बाद चिट्ठी में धमकी दी गई थी कि नहेम्याह की इच्छाओं के विषय में फारस के **राजा** को सूचित कराया जाएगा। यह फिर यह विनती करने साथ समाप्त होती है कि नहेम्याह सम्बल्लत से भेंट करे ताकि वे **एक साथ सम्मति करें।**

सम्बल्लत की विनती के पीछे तर्क का संदेश स्पष्ट नहीं है। सम्भवतः ये विचार यह था कि, यदि ये अफवाहें अर्तक्षत्र तक पहुँच गईं, तो फारसी सम्राट बलवे को वश में करने के लिए यहूदा के विरुद्ध कूच करेगा। उस घटना में, सामरिया भी युद्ध के कारण पीड़ित होगा। बलवे को वश में करने के लिए बल के उपयोग का खतरा अवास्तविक नहीं था: शहरपनाह के पुनर्निर्माण का प्रयास को एक विद्रोही कार्य के रूप समझा गया और "हथियारों के बल" से इसे रोक दिया गया था (एज्रा 4:11-23)।

यह सुझाव भी कि प्रधानों को "एक दूसरे से सम्मति" करनी चाहिए, तर्कसंगत था। यह नहेम्याह को अन्य प्रधानों के साथ मिलकर महत्वपूर्ण प्रश्नों पर चर्चा करने की अपील प्रतीत होती है: क्या ये ख़बरें सच थीं? यदि नहीं, इन्हें किस प्रकार रोका जा सकता था? क्या राजा के सामने इन खबरों का वॉल्.न करने के लिए एक दूत को भेजा जाए? "खुली चिट्ठी" के पीछे का तर्क तर्कसंगत प्रतीत होता है; यह आसानी से नहेम्याह और अन्य किसी भी पढ़ने वाले को मूर्ख बना सकता था।

आयत 8. नहेम्याह ने धोखा नहीं खाया। वह जानता था कि इस प्रकार की कोई खबर नहीं फैल रही थी। वह यह भी जानता था कि अर्तक्षत्र को उस पर विश्वास था और उसे इसकी अनुमति भी थी और यदि इस प्रकार की कोई भी खबर फारसी राजा तक पहुंची तो उसे तुरन्त अस्वीकार कर दिया जाएगा। इसी कारण, उसने इस पाँचवें संदेश का उत्तर इन शब्दों से दिया: **"जैसा तू कहता है, वैसा तो कुछ भी नहीं हुआ, तू ये बातें अपने मन से गढ़ता है।"** वास्तव में, वह सम्बल्लत से कह रहा था, "तू झूठ बोल रहा है! तुम्हारी यह पूरी कहानी मन गढ़त है।" किसी काल्पनिक समस्या पर चर्चा करने के लिये अपने शत्रुओं से भेंट करने की उसकी इच्छा नहीं थी।

आयत 9. इस कहानी का यह विवरण इस स्पष्ट कथन के साथ समाप्त होता है कि ये शत्रु क्या प्राप्त करने की इच्छा में थे। उनकी **इच्छा** यहूदियों को फारसी आक्रमण के द्वारा डराने की थी ताकि यहूदियों **के हाथ ढीले पड़ें, और काम बन्द हो जाए**। "हाथ ढीले पड़ें" को ESV में अधिक शाब्दिक तौर पर अनुवाद किया गया है: "उनके हाथ काम करने में ढीले पड़ जाएँ।"

नहेम्याह ने इस षड्यंत्र का अपना विवरण परमेश्वर को पुकारने के द्वारा समाप्त किया: **परन्तु अब हे परमेश्वर, तू मुझे हियाव दे।** इस पुस्तक को परमेश्वर के इस भक्त व्यक्ति की छोटी प्रार्थनाओं के साथ विराम चिन्ह लगाए गए हैं। इस मामले में, "हे परमेश्वर" वाक्यांश इब्रानी शब्द में नहीं मिलता। फिर भी, अपील "मुझे हियाव दे" परमेश्वर को सम्बोधित प्रार्थना के रूप में अधिक तर्कसंगत है (देखें NIV; NRSV; REB)। कुछ एड. इन शब्दों को नहेम्याह के संकल्प की अभिव्यक्ति के रूप में समझते हैं। उसके हाथों को ढीले पड़ने देने के बजाय, वह उन्हें "दृढ़" करेगा। NAB में "मैंने अब अपने प्रयासों को दोगुना कर दिया है," जबकि NEB कहती है, "मैंने अपने आप को अधिक ऊर्जा के साथ तैयार किया है।"

दूसरा षड्यंत्र: "अपने शत्रुओं से बचने के लिए मन्दिर में भाग जा" (6:10-14)

[10]फिर मैं शमायाह के घर में गया, जो दलायाह का पुत्र और महेतबेल का पोता था, वह तो बन्द घर में था; उसने कहा, "आ, हम परमेश्वर के भवन अर्थात् मन्दिर के भीतर आपस में भेंट करें, और मन्दिर के द्वार बन्द करें; क्योंकि वे लोग तुझे घात करने आएँगे, रात ही को वे तुझे घात करने आएँगे।" [11]परन्तु मैं ने कहा, "क्या मुझ जैसा मनुष्य भागे? और मुझ जैसा कौन है जो अपना प्राण बचाने को मन्दिर में घुसे? मैं नहीं जाने का।" [12]फिर मैं ने जान लिया कि वह परमेश्वर का भेजा नहीं है परन्तु उसने हर बात ईश्वर का वचन कहकर मेरी हानि के लिये कही, क्योंकि तोबियाह और सम्बल्लत ने उसे रुपया दे रखा था। [13]उन्होंने उसे इस कारण रुपया दे रखा था कि मैं डर जाऊँ, और वैसा ही काम करके पापी ठहरूँ, और उनको दोष लगाने का अवसर मिले और वे मेरी नामधराई कर सकें। [14]हे मेरे परमेश्वर! तोबियाह, सम्बल्लत, और नोअद्याह नबिया और अन्य जितने नबी मुझे डराना चाहते थे, उन सब के ऐसे-ऐसे कामों की सुधि रख।

आयत 10. नहेम्याह को दूसरे षड्यंत्र पता तब चला जब वह **शमायाह के घर में गया, ... वह तो बन्द घर में था।** शब्द यह नहीं बताता कि नहेम्याह शमायाह के घर में क्यों गया या शमायाह क्यों "सीमित" या "बन्द घर में" (KJV) था। विभिन्न अनुवाद शमायाह के "बन्द घर में" होने के विषय में दिए गए हैं एच. जी. एम. विलियमसन ने 6:10 का अनुवाद इस प्रकार किया, "बाद में, शमायाह के घर में गया ... वह अत्यन्त चिन्तित दिखाई पड़ा।" उन्होंने कहा कि यह अनुवाद सन्दर्भ के अनुसार सटीक बैठता है: शमायाह ने नहेम्याह को बुलवा भेजा, और यह दावा किया उसके पास परमेश्वर की ओर संदेश आया था; और जब नहेम्याह आया, उसने उसके सामने स्वयं को चिन्तित दिखाकर उसे मनाने का प्रयास किया।[8]

यह तथ्य कि नहेम्याह ने उसका निमंत्रण स्वीकार किया संकेत करता है कि शमायाह समाज में महत्व वाला एक व्यक्ति था - सम्भवतः वह एक याजक था,

क्योंकि उसने सुझाव दिया था कि वे **परमेश्वर के भवन अर्थात् मन्दिर के भीतर आपस में भेंट करें**, या वह एक नबी हो सकता है, इस प्रकार से उसके नहेम्याह को कहे शब्दों ने एक भविष्यद्वाणी का रूप ले लिया।[9] चाहे कोई भी मामला हो, शमायाह ने नहेम्याह से आग्रह किया कि वह उसके साथ "मन्दिर के भीतर," बन्द **द्वारों** के पीछे मिले क्योंकि नहेम्याह के शत्रु **रात में** [उसे] **घात करने आ रहे थे**। अनकही धारणा यह थी कि वह मन्दिर में सुरक्षित रहेगा।

इस विनती की एक तर्कसंगत योजना के रूप में भी व्याख्या की गई होगी। चूंकि नहेम्याह यहूदियों का प्रधान था, उसका कुशल उनकी सफलता के लिए महत्वपूर्ण था; इसी कारण, यहाँ तक उसका मन्दिर के भीतर जाना तकनीकी रूप से व्यवस्था के विरुद्ध था, इस अवसर पर उसका मन्दिर में शरण लेना उचित समझा गया होगा। उसे सुरक्षित रखने के द्वारा, एक बड़ी भलाई को पूरा किया जा सकता था: शहरपनाह को पूरा किया जा सकता था।

व्यवस्था ने इस प्रकार के मामलों के विषय में क्या कहा था? इसने याजकों के अलावा किसी और व्यक्ति को मन्दिर में प्रवेश करने से मना किया था (हालाँकि साधारण मनुष्य मन्दिर के चारों ओर के आँगन में प्रवेश कर सकते थे)। कुछ परिस्थितियों में, एक साधारण मनुष्य मन्दिर के परिसर में वेदी के सींगों को पकड़कर शरण प्राप्त कर सकता था (देखें निर्गमन 21:13, 14; 1 राजा. 1:50-53; 2:28-32)। फिर भी, एक विदेशी शत्रु से शरण मांगना उन परिस्थितियों में से एक नहीं था। इसके बजाय, नहेम्याह के लिए "प्रवेश करने पर मृत्यु दण्ड को प्रतिबन्धित कर दिया गया था (गिनती 3:10; 18:7)।"[10]

आयत 11. नहेम्याह का उत्तर दो आलंकारिक प्रश्नों के रूप में दिया गया था, दोनों ही उसके स्वयं के परमेश्वर का सेवक के रूप में उसकी समझ से सम्बन्धित थे।

उसने पहले कहा, **"क्या मुझ जैसा मनुष्य भागे?"** दूसरे शब्दों में, वह पूछ रहा था, "क्या वह जो यहूदा का अधिपति हो, अपने लोगों का अगुवा और यहोवा का विश्वासयोग्य अनुयायी हो, वह खतरे से भाग जाए?" नहेम्याह को अपने शत्रुओं का सामना करने का विश्वास था। उसे समझ में आ गया कि मन्दिर में प्रवेश करने से उसे अपमानित होना पड़ेगा और यहूदियों के प्रधान के रूप में अपनी विश्वसनीयता खोनी होगी।

दूसरा उसने पूछा, "**मुझ जैसा कौन है जो अपना प्राण बचाने को मन्दिर में घुसे?**" वह इस बात पर बल दे रहा था कि, "क्या तुम ये सोचते हो कि मुझे यह समझ नहीं कि मन्दिर में प्रवेश करने का अधिकार केवल याजकों का है? मैं वहाँ का नहीं हूँ, यदि, एक साधारण मनुष्य के रूप में मुझे मन्दिर में जाना पड़े, तो इसका मूल्य मेरे प्राण होंगे।" नहेम्याह परमेश्वर के सामने दीन बना रहा, और वह उसकी व्यवस्था को तोड़ने या उसके पवित्र भवन को अपवित्र करने को तैयार नहीं था। क्योंकि वह मनुष्यों के सामने निडर और परमेश्वर के सामने दीन था, इसलिए नहेम्याह ने मन्दिर में प्रवेश करने से मना कर दिया। एडविन एम. यमूची ने टिप्पणी की, "नहेम्याह एक डरपोक व्यक्ति नहीं था जो भागकर छुप जाए ...। न

ही वह व्यवस्था का अपराध करके अपना जीवन बचाना चाहता था।[11]

आयत 12. प्रत्यक्ष रूप से, नहेम्याह ने उसे शीघ्र उत्तर देने के द्वारा **जान लिया** कि शमायाह उससे झूठ बोल रहा था। उसे किस प्रकार पता चला? उसने तर्क दिया कि **वह परमेश्वर का भेजा नहीं है** क्योंकि उसने नहेम्याह से एक ऐसी बात कही थी जो कि मूसा की व्यवस्था के विरुद्ध थी (देखें व्यव. 13:1-5)। यदि परमेश्वर ने उसे नहीं भेजा था, तो नहेम्याह ने निष्कर्ष निकाला कि अवश्य ही उसे यहूदा के शत्रु **तोबियाह और सम्बल्लत** के द्वारा रुपया दे रखा था। इसलिए, यह वाक्यांश (देखें 6:14) संकेत करता है कि कुछ नबी किराए के लिए थे-या, जैसा कि किसी ने कहा है, यहूदा में "लाभ के नबी" थे।

आयत 13. नहेम्याह के शत्रुओं ने उससे झूठ बोलने के लिए एक नबी को रुपया क्यों दिया? वे चाहते थे कि वह इस कहानी से कि लोग उसे घात करने आ रहे थे **डर** जाए। उन्हें आशा थी कि भागने और मन्दिर में छिपने के द्वारा **वह वैसा ही काम करेगा**। यदि वह ऐसा करता, तो उसकी प्रतिष्ठा नाश हो जाती। लोग कहते कि यहूदियों का प्रधान एक डरपोक था जो अपने शत्रुओं के सामने से भाग निकला। इससे भी अधिक, वह एक ऐसा मनुष्य बन जाता जिसने मन्दिर में प्रवेश किया था, और ऐसा करने के द्वारा, उसने परमेश्वर के पवित्र मन्दिर को अपवित्र करने के द्वारा **पाप किया था**! इस प्रकार से नहेम्याह की **नामधराई** होती, वह शहरपनाह के पुनर्निर्माण में लोगों की अगुवाई जारी रखने के लिए अयोग्य हो जाता। सम्भवतः काम अधूरा रह जाता।

आयत 14. नहेम्याह फिर से प्रार्थना में **परमेश्वर** की ओर मुड़ा, इस बार उसने उससे विनती की कि वह उन बुरी बातों के कारण जो उन्होंने की थीं **तोबियाह, सम्बल्लत ... की सुधि रखे**। इसके बाद उसने फिर उसने एक अनुलेख जोड़ा, जिसमें परमेश्वर से कहा गया कि वह **नोअद्याह नबिया**[12] को स्मरण रखे। उसने स्पष्ट तौर पर वही नबूवत जो उसने शमायाह से सुनी थी जिसका वही उद्देश्य (उसे **डराने** का) था, उसी का उच्चारण करके उसे परीक्षा में डालने का प्रयास किया। **अन्य नबियों** संदर्भ से संकेत मिल सकता है कि नहेम्याह से ऐसे झूठ बोले जाते रहे।

शहरपनाह का पूरा होना (6:15, 16)

[15]एलूल महीने के पच्चीसवें दिन को अर्थात् बावन दिन के भीतर शहरपनाह बन गई। [16]जब हमारे सब शत्रुओं ने यह सुना, तब हमारे चारों ओर रहनेवाले सब अन्यजाति डर गए, और बहुत लज्जित हुए; क्योंकि उन्होंने जान लिया कि यह काम हमारे परमेश्वर की ओर से हुआ।

आयत 15. नहेम्याह के उत्कर्ष को सामान्य तौर पर बताया गया है: **शहरपनाह बन गई।** यहूदा के शत्रुओं की सारी योजनाएँ विफल होने के बाद - नहेम्याह के नेतृत्व, मजदूरों की लगन और, विशेष रूप से, यहोवा की सहायता के

लिए धन्यवाद (6:16) - इस कार्य को सफलतापूर्वक पूरा किया गया। नहेम्याह ने उल्लेख किया **एलूल महीने के पच्चीसवें दिन** वर्ष के **छठे** महीने में काम समाप्त हो गया। आम तौर पर "एलूल" अगस्त/सितंबर से मेल खाता है। आज, इस घटना को 2 अक्तूबर, 445 ई.पू. की तिथि दी गई है (देखें NLT)।

इस काम में केवल **बावन** दिन लगे-किसी के भी मापदण्ड के हिसाब से एक उल्लेखनीय उपलब्धि। मानवीय दृष्टिकोण से, स्थिति की तात्कालिक, स्वयंसेवियों की विशाल संख्या, निर्माण सामग्री के लिए पत्थर का पुन: उपयोग, और यह तथ्य ये है कि वे पुनर्निर्माण (शून्य से आरम्भ नहीं कर रहे थे) कर रहे थे सभी ने परियोजना की तीव्र गति में योगदान दिया। हालाँकि शहरपनाह के पूरा होने का विवरण नहेम्याह 6 में पाया जाता है, इसके समर्पण का विवरण 12:27-43 तक के लिए स्थगित कर दिया गया है।

आयत 16. यहूदा के पड़ोसी यहूदियों की उपलब्धि से आश्चर्यचकित थे, नहेम्याह ने कहा कि उनके **शत्रु**, यहूदियों की उपलब्धि के विषय में सुनकर, **डर गए** (शाब्दिक तौर पर "अपनी ही नजरों में गिर गए")। **सब अन्यजाति** लोगों की यही प्रतिक्रिया थी जो चारों ओर रहते थे।

आयत 16 का इब्रानी शब्द, जो कठिन है, विभिन्न तरीकों से प्रस्तुत किया गया है। उदाहरण के लिए, NIV इसे निम्नलिखित तरीके से अनुवादित करती है: "जब हमारे सभी शत्रुओं ने इस विषय में सुना, तो सभी आसपास की जातियाँ डर गई और अपना आत्मविश्वास खो दिया।" NAB में "जब हमारे सभी शत्रुओं ने यह सुना, और सभी जातियों ने इसके विषय में ध्यान दिया था, तो हमारे शत्रुओं ने जातियों की नजरों में अपना सम्मान खो दिया।" "आत्मविश्वास" या "सम्मान" खो देने कि बजाए, REB कहती है कि "उन्होंने इसे एक बहुत ही शानदार उपलब्धि माना।" NIV के समान, विलियमसन ने आयत का अनुवाद किया, "जब हमारे शत्रुओं ने इसके विषय में सुना, तो सभी जातियाँ जो हमारे चारों ओर थीं, उनके उनका हियाव टूट गया; उन्होंने महसूस किया कि इस काम को हमारे परमेश्वर ने पूरा किया था।" उन्होंने तब टिप्पणी की, "जैसे ही नहेम्याह की उपलब्धियों के विषय में प्रधानों से लेकर लोगों तक को पता चला, वे परमेश्वर की अपने लोगों की ओर से प्रकट की गई इस स्पष्ट अभिव्यक्ति पर आश्चर्यचकित थे।"[13]

शहरपनाह को पूरा करके, यहूदियों ने अपने शत्रुओं का हियाव तोड़ दिया और पड़ोसी राज्यों के लोगों की दृष्टि में अधिक सम्मान प्राप्त किया, जिन्होंने माना कि ये उपलब्धियां [उनके] ईश्वर, याहवेह की सहायता का परिणाम थीं। अन्यजातियों ने यहूदियों के "भले कामों" को देखा था, इस परिणामस्वरूप उन्होंने परमेश्वर को महिमा दी (मत्ती 5:16 देखें)।

नहेम्याह का उन यहूदियों के द्वारा विरोध किया जाना जो शत्रुओं के मित्र थे (6:17-19)

[17]उन दिनों में भी यहूदी रईसों और तोबियाह के बीच चिट्ठी बहुत आया जाया करती थी। [18]क्योंकि वह आरह के पुत्र शकम्याह का दामाद था, और उसके पुत्र यहोहानान ने बेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम की बेटी से विवाह कर लिया था; इस कारण बहुत से यहूदी उसका पक्ष करने की शपथ खाए हुए थे। [19]वे मेरे सुनते उसके भले कामों की चर्चा किया करते, और मेरी बातें भी उसको सुनाया करते थे। तोबियाह मुझे डराने के लिये चिट्ठियाँ भेजा करता था।

आयत 17. यहूदियों के साथ **तोबियाह** के घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण **यहूदा** में उसके मित्रों के साथ उसका **चिट्ठी** का आदान-प्रदान जारी रहा।

आयत 18. नहेम्याह ने यहूदियों के बीच में तोबियाह के प्रभाव की व्याख्या की। स्पष्ट तौर पर **यहूदा** के लोगों साथ उसके *धार्मिक सम्बन्ध* थे। उसका नाम और **उसके पुत्र यहोहानान** के नाम में याहवेह के नाम का एक सन्दर्भ सम्मिलित है, जो यह संकेत करता है, कि वह किसी सीमा तक, यहोवा का एक आराधक था। इसके साथ ही, उसके कुछ यहूदियों के साथ *आर्थिक सम्बन्ध* रहे होंगे। बहुत से लोग उसका पक्ष करने की **शपथ** खाए हुए थे, सम्भवतः वे वाचाएँ जो उन्होंने व्यापारिक सौदों के माध्यम से की होंगी।[14] इसके साथ ही, उसके यहूदी लोगों से *पारिवारिक सम्बन्ध* भी थे। उसका विवाह एक (संभवतया) प्रमुख यहूदी **शकम्याह** की पुत्री से हुआ था, और उसके पुत्र ने दूसरे प्रभावशाली यहूदी की **बेटी से विवाह कर लिया था**।

आयत 19. इस प्रकार के मनुष्य नहेम्याह के सामने **तोबियाह** के भले कामों की चर्चा किया करते थे, इसमें संदेह नहीं कि वे ऐसा नहेम्याह को भयभीत करने के लिए करते थे। इसके अलावा, तोबियाह के मित्रों ने भेदियों के रूप में (शायद अनजाने में) काम किया, जिसमें वे तोबियाह को उसकी (नहेम्याह) **की बातें** सुनाया करते थे। इन मित्रों के माध्यम से, तोबियाह ने डराने के लिए चिट्ठी भेजकर नहेम्याह का विरोध करना जारी रखा। हालाँकि यह हो सकता है कि तोबियाह के ये पत्र शहरपनाह के पूरा होने से पहले नहेम्याह को भेजे गए थे,[15] यह सम्भावना अधिक है कि ये आयतें शहरपनाह के पुनः निर्माण के बाद तोबियाह के नहेम्याह के लगातार विरोध करने का उल्लेख करती हैं।

अनुप्रयोग

प्रभावशाली नेतृत्व: बाहरी विरोध पर विजय प्राप्त करना (अध्याय 6)

एक मनुष्य का माप यह है कि वह दबाव में कितना अच्छा प्रदर्शन करता है, या वह कैसे कार्य करता है। एक अगुवे का माप यह है कि वह विरोध को किस प्रकार सम्भालता है। कोई भी सैनिक कूच करते समय साहसी दिख सकता है; प्रश्न

यह है कि आग के नीचे वह कितना साहसी काम करेगा। आकाश के साफ होने पर सभी नाविक अच्छे दिख सकते हैं, परन्तु समुद्र के तूफानी होने पर वे कैसे कार्य करते हैं? जब सब कुछ सुचारू रूप से चल रहा हो तो एक क्लब या निगम का अध्यक्ष एक अच्छा प्रभाव डाल सकता है, परन्तु यह ये प्रमाणित नहीं करता कि जब उसका विरोध होगा तो वह अच्छे निर्णय का प्रयोग करेगा।

अगुवों के लिए, आकाश सदैव साफ नहीं रहता। विरोध उत्पन्न होगा। पार करने के लिए बाधाएं होंगी। यह तथ्य परमेश्वर के लोगों के अगुवों के लिए भी सत्य है; और अन्य नबियों के लिए भी था। उसके जीवन भर, दाऊद को विभिन्न प्रकार के विरोधियों का सामना करना पड़ा। यीशु ने शत्रुओं का सामना किया, वास्तव में, अन्ततः उन्होंने उसका जीवन तक ले लिया। उसके शिष्य भी उसके कदमों पर चले; पतरस और यूहन्ना को चेतावनियाँ मिलीं; याकूब शहीद हो गया। पारम्परिक कथाओं के अनुसार, प्रेरितों में से केवल यूहन्ना ही स्वाभाविक मृत्यु मरा। अन्य सभी अपने विश्वास के कारण शहीद हो गए। पौलुस ने प्रायः अपने शत्रुओं के हाथों दुःख उठाया और अन्त में उनके द्वारा मारा गया।

जब एक अगुवे का सामना शत्रुओं से होता है तो उसे क्या करना चाहिए? नहेम्याह के अनुभव इस प्रश्न का उत्तर देने में सहायता करते हैं? उसे बाहरी विरोध (बाहरी शत्रुओं) और आन्तरिक विरोध (भीतर के शत्रुओं) दोनों का सामना करना पड़ा।

नहेम्याह के यहूदा में पहुँचने के समय से लेकर, उसने देश के लोगों के विरोध का सामना किया। वे नहेम्याह और यहूदियों को शहरपनाह का पुनर्निर्माण करते हुए नहीं देखना चाहते थे, तो उन्होंने उनके प्रयत्नों को रोकने के लिए हर एक प्रयास किए। नहेम्याह के शत्रु इस बात से अप्रसन्न थे कि वह यहूदियों की सहायता करने के लिए आया था (2:10)। उन्होंने यहूदियों की योजनाओं का "उपहास" और "तिरस्कार" किया और उनके ऊपर "बलवा करने" के आरोप लगाए (2:19)। वे "कुपित" और "क्रोधित" हो गए और उन्होंने जब निर्माण कार्य आरम्भ हुआ तो यहूदियों का "उपहास" किया (4:1)। उन्होंने यहूदियों के प्रयत्नों का अपमान किया, ये कहते हुए कि उनका काम व्यर्थ था और इसका कोई फल नहीं निकलेगा (4:2, 3)। जब काम जारी रहा, तो वे "क्रोधित" हो गए और परमेश्वर के लोगों "विरोध में लड़ाई" करने की योजनाएँ बनाने लगे ताकि उनको और उनके पवित्र नगर की शहरपनाह को नाश करें (4:7, 8)। जब उनकी अन्य योजनाएं विफल हो गईं, तो उन्होंने नहेम्याह को उनसे "ओनो के मैदान में" भेंट करने के लिए आमंत्रित किया, उनकी इच्छा उसकी "हानि" करने की थी (6:2, 3)। उन्होंने के कहानी गढ़ी, ये कहते हुए कि यहूदियों की विद्रोही गतिविधियों की सूचना राजा को दे दी जाएगी। उन्होंने नहेम्याह को काम से दूर करने और यहूदियों को डराने का प्रयास किया ताकि वे अपना काम समाप्त होने से पहले छोड़ दें (6:5-7)। अन्त में, उन्होंने नहेम्याह को परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने के लिए मनाने का प्रयास करने के लिए झूठे नबियों को काम पर रखा ताकि उसे एक अगुवे के रूप में बदनाम किया जा सके (6:10-13)। एक ऐसे अगुवे की कल्पना करना कठिन होगा, जिसने

नहेम्याह की तुलना में अधिक बाधाओं का सामना किया हो।

नहेम्याह ने अपने शत्रुओं के विरोध का सामना किस प्रकार किया?

उसने उनके शब्दों को उसे निराश और भयभीत नहीं करने दिया। उसका उपहास किया गया, अपमान किया गया, ताने मारे गए, और नामधराई की गई। इस प्रकार के अनुभव बहुत से अगुवों का ध्यान भंग कर सकते हैं और उनके उचित व्यवहार के नियमों को भूलने का कारण बन सकते हैं? इसका परिणाम उनके सच्चाई और प्रभाव की हानि होगा। यह नहेम्याह के साथ नहीं हुआ। उसने जान लिया कि केवल बातें-विशेषतः एक शत्रु के शब्द-परमेश्वर के दास को वह कार्य करने से नहीं रोक सकते जिनके उचित होने का उसे पता है।

उसने उनकी धमकियों को गंभीरता से लिया और वह सब किया जो वह उसकी और उस महान कार्य की सुरक्षा करने के लिए कर सकता था जो वह कर रहा था। केवल शब्द अकेले ही भौतिक हानि नहीं कर सकते; परन्तु जब शब्द हमारे काम के लिए एक चेतावनी उत्पन्न करते हैं, तो उन्हें गम्भीरतापूर्वक लिए जाने की आवश्यकता होती है। एक अगुवे को भाइयों के उद्देश्यों की उपलब्धि के लिए सम्भावित समस्याओं और खतरों को पहले से ही देखने का प्रयास करना चाहिए। इसके बाद उसे समस्याओं और खतरों को रोकने और उन पर विजय प्राप्त करने के लिए तार्किक कदम उठाने चाहिए।

ऑस्ट्रेलिया के लोगों को एक बात कहने के लिए जाना जाता है, "मित्र, वह ठीक हो जाएगी," जो एक ऐसे व्यवहार का प्रदर्शन करता है जो कि दर्शाता है कि अन्त में सब ठीक हो जाएगा। यद्यपि इस व्यवहार की बहुत सी परिस्थितियों में मान्यता है, एक अगुवा यह कल्पना नहीं कर सकता कि उसके कुछ किए बिना ही सब बातें अपने आप अन्त में ठीक हो जाएंगी। उसे "उत्तम बात की आशा होनी चाहिए, बुरी बात की अपेक्षा होनी चाहिए, और प्रत्येक बात के लिए तैयार रहना चाहिए।"

नहेम्याह ने उस समय समझौता करने से इनकार कर दिया जब इसका अर्थ अपनी उपलब्धि और लक्ष्य को छोड़ देना था। यदि वह अपने शत्रुओं से "ओनो के मैदान में" भेंट करता (6:2), तो वे शहरपनाह के काम को रोकने के उनके लक्ष्य में सफल हो जाते। यह जानकर कि इसका परिणाम यह होगा उसने उनसे मिलने से इनकार कर दिया।

जब एक अगुवा लोगों के साथ काम करता है तो प्रायः समझौता महत्वपूर्ण होता है। उसे आम तौर पर इस प्रकार के समझौतों के पक्ष में होना चाहिए जिनका परिणाम सबकी संतुष्टि होगी। हालाँकि, किसी भी अगुवे (विशेषतः मसीही अगुवे) के सिद्धान्त होने चाहिए जिन पर समझौता करने से वह इनकार करता हो। एक लक्ष्य-केन्द्रित अगुवा विरोधियों से तब समझौता करने से इनकार कर देगा जब इसका परिणाम मूल उद्देश्य से पीछे हट जाना हो।

वह प्रत्येक मामले को परमेश्वर के सामने लाया। उसके विरोधियों ने उस पर जितना अधिक दबाव डाला, उसने उतना ही अधिक परमेश्वर का सहारा लिया। जब 4:2, 3 में शत्रुओं ने उस काम का उपहास किया जो यहूदी कर रहे थे, नहेम्याह

ने इसका उत्तर एक प्रार्थना के द्वारा दिया: "हे हमारे परमेश्वर, सुन ले कि हमारा अपमान हो रहा है; और उनका किया हुआ अपमान उन्हीं के सिर पर लौटा दे" (4:4)। फिर, उसकी प्रार्थना को लिखने के बाद, नहेम्याह ने इसमें जोड़ा, "हम लोगों ने शहरपनाह को बनाया ... क्योंकि लोगों का मन उस काम में नित लगा रहा" (4:6)। शारीरिक हानि की धमकी पर नहेम्याह ने कहा, "परन्तु हम लोगों ने अपने परमेश्वर से प्रार्थना की" (4:9)।

यद्यपि अन्य अगुवों को केवल स्वयं और अपने मित्रों पर निर्भर होना चाहिए, मसीही अगुवे परमेश्वर पर भी निर्भर हो सकते हैं। जब विरोध उत्पन्न होता है, तो मसीही प्रार्थना में परमेश्वर के पास जा सकते हैं, और उन्हें जाना चाहिए। वह हर मुसीबत को यहोवा के सामने ला सकता है, यह जानते हुए कि वह अपने सेवकों की चिन्ता करता है और सहायता करेगा (इब्रा. 13:6)।

परमेश्वर की कलीसिया में एक अगुवा यह विश्वास रख सकता ही कि प्रभु उसकी देखभाल करेगा।, परन्तु उसे यह कल्पना नहीं करनी चाहिए कि परमेश्वर उसे परीक्षाओं का अनुभव करने से रोके रखेगा। कलीसिया में समस्याओं के विषय में नए नियम में दी गई प्रतिज्ञाएं केवल ये हैं कि मसीही परीक्षाओं और सताव का अनुभव करेंगे। मसीह ने चेतावनी दी कि उसके पीछे चलनेवालों का उपहास किया जाएगा और उनका अपमान किया जाएगा। संगठन और व्यक्ति कलीसिया का विरोध करेंगे और इसे अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने से दूर रखने का प्रयास करेंगे। कुछ समाजों में, कलीसिया और उसके सदस्यों को शारीरिक रूप से सताया जा सकता है।

उपसंहार। जब ऐसी बातें हों, तो मसीहियों के रूप में हमें क्या करना चाहिए? नए नियम के अनुसार, हम हथियार नहीं उठा सकते और हमारे शत्रुओं के विरोध में शारीरिक बल का प्रयोग नहीं कर सकते (इफि. 6:12) या जब दूसरे हमारे साथ गलत करते हैं तो उन पर पलट वार नहीं कर सकते (रोमियों 12:19)। इसके बजाए, हमें अपने शत्रुओं से प्रेम रखना चाहिए, उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए, और उनकी भलाई करनी चाहिए (मत्ती 5:44; रोमियों 12:20, 21)। हमें इस प्रकार से जीना चाहिए, कि हमारे सभी सम्बन्धों में हम अपने शत्रुओं को बदनाम करने का कोई कारण नहीं देना चाहिए (देखें 1 पतरस 2:1-3:22)। हमें हर परिस्थिति में बुद्धिमानी से काम करना है, तब भी जब हमें सताया जा रहा हो।

कलीसिया का निर्माण करना (अध्याय 6)

यीशु ने कहा, "मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा" (मत्ती 16:18), और उसने ठीक वही किया जो उसने कहा था कि वह करेगा। यीशु के पुनरुत्थान के बाद पेन्तिकुस्त के दिन, कलीसिया अस्तित्व में आई (प्रेरितों 2:1-47; देखें 5:11)। हालाँकि, यीशु ने अपने शिष्यों के हाथों में "कलीसिया का निर्माण" जारी रखने का काम छोड़ दिया। उसने अपने लोगों को कलीसिया की उन्नति करने या निर्माण करने का उपहार दिया (इफि. 4:7-13)।

प्रचारक और शिक्षक जो नई कलीसियाएँ स्थापित करते हैं और फिर उन्हें

विकसित करने में सहायता करते हैं, वे कलीसिया के निर्माण में सम्मिलित होते हैं। पौलुस ने स्वयं की तुलना "एक बुद्धिमान राजमिस्त्री" से की, जिसने "एक नींव रखी" जिस पर अन्य निर्माण कर सकते थे। उसने कहा कि "परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है" (1 कुरि. 3:10, 11)। मसीह के लिए मजदूरों के रूप में हमारी जिम्मेदारी, यह देखना है कि कलीसिया आरम्भ हो और बढ़े, आत्मिक और संख्यात्मक दोनों रूप से।

हम यह किस प्रकार कर सकते हैं इसके विषय में नहेम्याह से सीख सकते हैं। राजा द्वारा उसे अधिपति नियुक्त करने के बाद, नहेम्याह ने यहूदा की यात्रा की। वहाँ उसने यहूदियों का शहरपनाह का पुनर्निर्माण करने में नेतृत्व किया - एक ऐसा काम जो उन्होंने केवल बावन दिनों में पूरा किया। यह बाइबल की सबसे बड़ी "सफलता की कहानियों" में से एक होनी चाहिए। नहेम्याह के अनुकरणीय नेतृत्व से चार सिद्धान्तों का पता चलता है जो "कलीसिया निर्माण" के लिए आवश्यक हैं।

अच्छे अगुवों का विकास करें। प्रत्येक मण्डली को नहेम्याह के समान मजबूत अगुवों की आवश्यकता है।

1. वह परमेश्वर की बातों के विषय में चिन्ता करता था। जब उसे पता चला कि "शहरपनाह टूटी हुई, और उसके फाटक जले हुए हैं," तो वह ये बातें सुनते ही बैठकर "रोने लगा" और कितने दिन तक "विलाप करता रहा" (1:1-4)। क्यों? क्योंकि यहूदी परमेश्वर के लोग थे, और वे परेशानी में थे। शहरपनाह के बिना, यरूशलेम नगर, "पवित्र नगर" (11:1, 18) पर आक्रमण किया जा सकता था और उसे नष्ट किया जा सकता था। परमेश्वर यहूदियों को घर ले आया था, लेकिन उनकी घर वापसी के नाश होने का खतरा था क्योंकि वे रक्षाहीन थे। नहेम्याह रोया क्योंकि परमेश्वर के लोग और परमेश्वर का उद्देश्य संकट में थे।

यदि आज कलीसिया का निर्माण सफल तरीके से करना है, तो इसकी अगुवाई ऐसे लोगों के द्वारा की जानी चाहिए जो परमेश्वर के लोगों के विषय में चिन्ता करते हैं और परमेश्वर के राज्य को "पहले" (मत्ती 6:33)। अच्छे अगुवों का हृदय ऐसा होता है कि जब कलीसिया परेशानी में है या परमेश्वर का काम आगे नहीं बढ़ता तो यह टूट जाता है।

2. वह एक प्रार्थना का व्यक्ति था। जब उसे यरूशलेम की समस्या के विषय में पता चला, नहेम्याह ने विलाप किया और उपवास किया। सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात, उसने प्रार्थना की (1:4-11)। जैसे-जैसे वह अपने लक्ष्य की सिद्ध होने की ओर काम करता गया, वह प्रार्थना करता रहा। नहेम्याह 1 में अपनी प्रार्थना में, उसने प्रभु को सम्बोधित किया, उसकी महानता और भलाई के लिए उसकी प्रशंसा की और नम्रता पूर्वक उसकी प्रार्थना सुनने के लिए कहा। उसने लोगों के पापों और अपने पापों को स्वीकार किया। तब उसने प्रभु से अपने लोगों को बंधुआई से वापस लाने के उसकी प्रतिज्ञा को स्मरण करने के लिए कहा। उसने परमेश्वर से प्रार्थना की कि जब वह राजा के पास जाए तो उसे सफलता प्रदान करे। परमेश्वर ने यह प्रार्थना सुनी, और राजा ने नहेम्याह को वापस जाने और बंधुआई से लौटे लोगों की सहायता करने की अनुमति दी।

वे अगुवे जो "कलीसिया निर्माण" की अभिलाषा करते हैं उन्हें निरन्तर प्रार्थना करते रहना चाहिए (देखें 1 थिस्स. 5:17)। प्रथम कलीसिया "प्रार्थना करने में लौलीन रही" (प्रेरितों 2:42; KJV)। कलीसिया में हमारे काम को प्रार्थना के साथ आरम्भ होने और समाप्त होने की आवश्यकता है!

3. वह एक अच्छा आयोजक था। लगभग, परिभाषा के अनुसार, एक अच्छा अगुवा वह होता है जो काम पूरा करने के लिए दूसरों के काम को व्यवस्थित करने में सक्षम होता है। नहेम्याह में वह क्षमता थी। एक बार जब वह यरूशलेम पहुंच गया और स्थिति का सर्वेक्षण किया, तो उसने लोगों को एक साथ बुलाया, उन्हें इस बात के लिए मनाया कि उन्हें क्या चाहिए, और फिर उन्हें व्यवस्थित किया ताकि शहरपनाह का हर भाग बनाया जाए (2:17-3:32)। लोगों को संगठित करने की उसकी अगली क्षमता जब उसने सशस्त्र दल के खतरे का सामना किया, जिसे अध्याय 4 में देखा गया है।

4. वह समस्याओं पर जय पाने में सक्षम था। जब उसने शहरपनाह का निर्माण करने की ठानी तो नहेम्याह ने अनगिनत समस्याओं का सामना किया। पहले उसे फारस के राजा की अनुमति की आवश्यकता पड़ी। यहूदी लोग अब भी बन्दी थे, चाहे वे बेबीलोन में रह रहे हों या यहूदा में। वे फारसी राजा की अनुमति के बिना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य नहीं कर सकते थे, और इस बात का कोई आश्वासन नहीं था कि राजा यहूदियों की यरूशलेम की पुनः किलाबन्दी करने की विनती को अनुग्रह पूर्ण तरीके से देखेगा। नहेम्याह ने इस समस्या का सामना परमेश्वर से सहायता करने के लिए प्रार्थना करने और शहरपनाह के पुनर्निर्माण के लिए राजा से विनती करने के द्वारा किया। परमेश्वर ने उसकी विनती को स्वीकार करने के लिए राजा के मन को उभारा।

दूसरा, जैसे ही यहूदियों ने पुनर्निर्माण आरम्भ किया बाहर से विरोध उठने लगा। उस देश के निवासी (वे गैर-यहूदी जो यहूदियों के बीच में या अन्य आसपास के क्षेत्रों में रहा करते थे) उन्होंने शहरपनाह के पुनर्निर्माण का विरोध किया। वे चाहते थे कि यहूदी दुर्बल और असहाय बनें रहें, तो उन्होंने वह सब किया जो वे इस परियोजना को रोकने के लिए कर सकते थे। उन्होंने यहूदियों पर "राजा के विरुद्ध बलवा करने" का आरोप लगाया परन्तु नहेम्याह ने उनके हस्तक्षेप की परवाह नहीं की (2:19, 20)। उन्होंने यहूदियों को निराश करने के द्वारा काम को रोकने का प्रयास किया। उन्होंने मजदूरों का अपमान किया और उपहास किया, परन्तु नहेम्याह और यहूदियों ने अपने प्रयत्न जारी रखे (4:1-6)। इसके बाद शत्रुओं ने बल के द्वारा यहूदियों को धमकाया, परन्तु यहूदियों ने स्वयं को हथियार बन्द कर लिया। प्रत्येक मजदूर "अपनी तलवार लिए" हुए था; यद्यपि उनमें से आधे पुरुष काम करते थे और आधे पहरा दिया करते थे (4:7-23)। विरोधियों ने नहेम्याह की "हानि" की योजना बनाई (6:1-3), और उन्होंने उसे झूठे आरोपों के द्वारा "डराने" का प्रयास किया; परन्तु परमेश्वर के जन ने डरने से मना कर दिया। उन्होंने अन्य यहूदियों तक को "रुपया देकर" नहेम्याह को फुसलाकर मन्दिर में लाने का प्रयास किया (जहाँ मूसा की व्यवस्था के अनुसार, उसे जाने का अधिकार

नहीं था) ताकि उसे एक अगुवे के रूप में अयोग्य ठहराया जा सके; परन्तु नहेम्याह ने भीतर जाने से मना कर दिया, यहाँ तक कि अपने निजी सुरक्षा तक के लिए (6:10-14)।

जो भी रुकावटें विरोधियों ने उसके मार्ग में रखीं, नहेम्याह ने सदैव परमेश्वर पर भरोसा किया। प्रत्येक कठिनाई के साथ, नहेम्याह उसके पास प्रार्थना में आया (2:20; 4:4, 5, 9; 6:9, 14)। बाहरी लोगों की धमकी के प्रति यहूदियों का सामान्य उत्तर 4:9 में दिया गया है: "परन्तु हम लोगों ने अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उनके डर के मारे उनके विरुद्ध दिन रात के पहरुए ठहरा दिए।" उन्होंने परमेश्वर से सहायता के लिए प्रार्थना की और इसके बाद अपने बचाव के लिए वह जो कुछ कर सकते थे किया।

तीसरा, एक गम्भीर समस्या जिसका नहेम्याह ने सामना किया वह छावनी के मध्य पाप था। शहरपनाह के पुनर्निर्माण की कहानी के मध्य में, नहेम्याह यहूदियों के बीच के पाप का वर्णन का करने के लिए रुक गया। धनी कंगालों को धन उधार देकर उनका फायदा उठा रहे थे, उनसे ब्याज लेने के द्वारा, और इसके बाद कर्ज की वसूली करने के लिए उनकी भूमि पर कब्जा करने के द्वारा। नहेम्याह ने एक सभा बुलवाई, और उन लोगों को डांटा जिन्होंने इस प्रकार से पाप किया था, और उन्हें इस प्रकार के आचरण से दूर रहने के लिए समझाया (5:1-13)। नहेम्याह यह जानता था कि परमेश्वर के लोग तब तक सफलतापूर्वक निर्माण नहीं कर पाएंगे जब तक कि वे इस प्रकार के अधर्म के दोषी रहेंगे।

कलीसिया के अगुवों को यह समझने की आवश्यकता है कि वे समस्याओं का सामना करेंगे। कलीसिया निर्माण में उनकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वे अपने भाइयों को इन समस्याओं पर विजय प्राप्त करने में सहायता कर सकते हैं या नहीं। जो चुनौतियाँ खड़ी हो सकती हैं उनमें मण्डली के बाहर से विरोध और उनके सदस्यों में पाप है। कोई भी कठिनाई क्यों न हो, हल में सदैव सहायता के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करना और वह काम करना है जो परमेश्वर अपने लोगों से करवाना चाहता है। अगुवों का कर्तव्य परमेश्वर से यह बात जानने के लिए बुद्धि माँगना है कि वे क्या करें और उसे करने के लिए साहस भी मांगना है। जब परमेश्वर की इच्छा स्पष्ट हो, तो उन्हें मण्डली को घबराने और समस्या का सामना करने को टालने की परीक्षा का सामना करना चाहिए।

काम के लिए तैयार मजदूरों को ढूंढें। कलीसिया के निर्माण के लिए एक अन्य आवश्यक बात काम के लिए तैयार मजदूर हैं? यरूशलेम की शहरपनाह इतने कम समय में क्यों बन गई? नहेम्याह 4:6 कहता है "क्योंकि लोगों का मन उस काम में नित लगा रहा।" अध्याय 3 उन तैयार मजदूरों के नाम बताता है।

परियोजना के पूरा होने के लिए श्रेय नहेम्याह के विश्वासयोग्य नेतृत्व के कारण है, परन्तु इस सफलता का गौरव परमेश्वर को दिया जाना चाहिए। उसने वह सब प्रदान किया जो कि यहूदियों को शहरपनाह के पुनर्निर्माण के लिए चाहिए था, और उसने अपने लोगों को उनके शत्रुओं से बचाया। फिर भी, तैयार मजदूरों के बिना, कार्य पूरा नहीं हो सकता था। कलीसिया की आत्मिक और संख्यात्मक

वृद्धि केवल उपदेशक या मुख्य रूप से उपदेशक, पुरनियों या शिक्षकों पर निर्भर नहीं करती है। यह सदस्यों पर निर्भर करता है, और इस पर भी कि वे प्रभु के लिए काम करने के लिए तैयार हैं या नहीं।

परमेश्वर की आशीष की खोज में रहें। नहेम्याह की कहानी यह स्पष्ट करती है कि शहरपनाह पर काम करने वाले यहूदियों के सहयोग के साथ-साथ नहेम्याह के ज़बरदस्त और प्रभावी नेतृत्व के कारण शहरपनाह का पुनर्निर्माण हुआ था। यह परियोजना में परमेश्वर की भूमिका पर भी बल देता है। नहेम्याह ने परमेश्वर की सहायता के लिए प्रार्थना की। जब लक्ष्य पूरा हो गया, तो उसने परमेश्वर को श्रेय दिया। उसने कहा, "जब हमारे सब शत्रुओं ने यह सुना, तब हमारे चारों ओर रहनेवाले सब अन्यजाति डर गए, और बहुत लज्जित हुए; क्योंकि उन्होंने जान लिया कि यह काम हमारे परमेश्वर की ओर से हुआ" (6:16)।

शहरपनाह का पुनर्निर्माण किसने किया? कोई यह कह सकता है कि नहेम्याह ने किया या यहूदियों ने किया। नहेम्याह ने यह कहना अधिक उचित समझा होता, "परमेश्वर ने किया!" परमेश्वर ने इस परियोजना के हर स्तर पर यहूदियों की सहायता की थी। उसकी सहायता और उसकी आशीषों के बिना काम पूरा नहीं होता।

सबसे ऊपर, कलीसिया का निर्माण करने के लिए अच्छे अगुवों और तैयार मजदूरों को जिस वस्तु की आवश्यकता है वह परमेश्वर की सहायता है। पौलुस ने कहा कि उसने "लगाया," "अपुल्लोस ने सींचा," "परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया" (1 कुरि. 3:6; KJV)। जब उसने कलीसिया को अपनी उपलब्धियों के विषय में समाचार दिया, उसने उन सभी बातों का वर्णन किया कि "कि परमेश्वर ने उनके साथ होकर कैसे बड़े-बड़े काम किए" (प्रेरितों. 14:27)। हम प्रभु के लिए "सब कुछ" कर सकते हैं, परन्तु केवल मसीह के द्वारा "जो हमें सामर्थ्य देता है" (फिलि. 4:13)। हम अपनी "विनती से बढ़कर और समझ से आगे" प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर हमारे माध्यम से कार्य कर रहा है (इफि. 3:20, 21)। हमें निरन्तर परमेश्वर की आशीषों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, उसकी सहायता पर निर्भर रहना चाहिए, और उसकी ईश्वरीय देखभाल के सशक्तिकरण के लिए धन्यवादी होना चाहिए जो किसी भी सफलता को सम्भव बनाती है!

वाचा की आज्ञाकारिता पर केन्द्रित रहो। यद्यपि शहरपनाह के पुनर्निर्माण का वर्णन नहेम्याह 6 में पूर्ण हो जाता है, परन्तु पुस्तक की कहानी अभी भी समाप्त नहीं हुई है। पुस्तक का अन्त का अधिकांश भाग उस वाचा के नए किए जाने का वर्णन करता है जो यहोवा ने मूल रूप से इस्राएल के साथ सीनै पर्वत पर बाँधी थी। अध्याय 8 बताता है कि किस प्रकार वाचा के नए किए जाने की तैयारी के लिए एज्रा लोगों को व्यवस्था पढ़कर सुनाता है। उन्होंने उस देश के लोगों से "अपने आप को अलग किया" और उन्हें उनका इतिहास स्मरण दिलाया गया (9:2)। अध्याय 9 और 10, नवीनीकरण के लिए विशिष्ट प्रस्ताव दिए गए और बाद में उन्हें स्वीकार कर लिया गया, पहले प्रधानों के द्वारा और बाद में सभी लोगों के द्वारा। अध्याय 11 और 12 में, नहेम्याह ने यह सुनिश्चित करने के लिए काम किए

कि यहूदी उन प्रतिज्ञाओं का पालन करें जो उन्होंने किए थे: यरूशलेम फिर से बसाया गया, और पुनर्निर्मित शहरपनाह की प्रतिष्ठा की गई।

अध्याय 13 वर्णन करता है कि नहेम्याह राजा को इसका समाचार देने के लिए वापस शूशन गया। जब वह यहूदा में वापस आया, उसे पता चला कि यहूदियों ने धर्म विरोधी कार्य किए थे और वाचा को तोड़ रहे थे। वे उन प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासघाती हो रहे थे जिन्हें उन्होंने अभी लिया था! पुस्तक इस बात का वर्णन करते हुए समाप्त होती है कि नहेम्याह ने वाचा के तोड़ने वालों से किस प्रकार का व्यवहार किया। उसने तोबिय्याह का सामान मन्दिर से बाहर फेंक दिया, क्योंकि तोबिय्याह को परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करके वहाँ पर एक कोठरी की अनुमति दे दी गई थी। उसने यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए कि याजकों को सहायता मिलती रहे और विश्राम दिन को उपयुक्त तरीके पालन किया जाए।

यद्यपि पुस्तक का दूसरा भाग वाचा के नए किए जाने के सम्बन्ध में है, परन्तु इसमें वास्तव में परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने पर बल दिया गया है। यह विषय पहले अध्याय 1 में पाया गया था, जहाँ पर नहेम्याह ने परमेश्वर को ऐसे सम्बोधित किया था "जो अपने प्रेम रखने वाले और आज्ञा मानने वाले के विषय अपनी वाचा पालता और उन पर करुणा करता है" (1:5)। अध्याय 6 में, नहेम्याह ने परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति अपनी चिन्ता का तब प्रदर्शन किया जब उसने मन्दिर में जाने से इनकार कर दिया-एक ऐसा आचरण जिसके लिए व्यवस्था में मना किया गया था।

परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के महत्व पर व्यवस्था के पढ़े जाने और बाद में कहानी में इसके विधियों को लागू करने के द्वारा बल दिया गया है। इन कथाओं में, हम देखते हैं कि नहेम्याह परमेश्वर की सहायता से सफल हुआ, क्योंकि वह यह सुनिश्चित करना चाहता था कि परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया जाए।

आज, कलीसिया में, एक ऐसा समूह एकत्र करना जो बढ़ेगा और वृद्धि करेगा केवल यही पर्याप्त नहीं है। प्रभु की प्रत्येक मण्डली को उस व्यवस्था की आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहिए जिसके अधीन हम जीते हैं (देखें मत्ती 7:21; रोमियों 6:17, 18; इब्रा. 5:8, 9)।

परमेश्वर कलीसिया का निर्माण करने में हमारी सहायता करेगा। हालाँकि, वह मण्डली को आत्मिक रूप से तब आशीष दे सकता है जब वे जो भाई-बहन जो अगुवाई कर रहे हैं और सिखा रहे हैं, वे उसकी आज्ञाओं का पालन करने का प्रयास करते हैं।

उपसंहार। एक मसीही के रूप में हमारा काम "कलीसिया का निर्माण" है: कलीसिया को लगाना और इसके बाद बढ़ने में उनकी सहायता करना। हम यह कार्य सफलतापूर्वक तब प्राप्त कर सकते हैं यदि हमारे पास समर्पित, साधन-सम्पन्न और तैयार मजदूर हों। सबसे ऊपर, हमारे पास परमेश्वर की सहायता होनी चाहिए। वह हमारे प्रयत्नों से तब प्रसन्न होगा जब उसकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए हमारा उत्तम प्रयास करेंगे।

नहेम्याह ने एक अद्भुत बात को प्राप्त किया जब उसने यरूशलेम की शहरपनाह का निर्माण करने के लिए यहूदियों की अगुवाई की। हम तब इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात प्राप्त करते हैं जब हम अपने समुदायों में उस कलीसिया का निर्माण करते हैं जिसके लिए मसीह मरा (इफि. 5:25)।

दोषी ठहराने वाले उपदेश (अध्याय 6)

"आ, हम ओनो के मैदान के किसी गाँव में एक दूसरे से भेंट करें" (6:2)। यह निमंत्रण हानिरहित प्रतीत होता था, परन्तु नहेम्याह ने इस बात को पहचान लिया कि यह किसके लिए था। आज, परमेश्वर के शत्रुओं से समझौता करने वाला कोई भी हानिरहित निमंत्रण हमारे (या एक मण्डली की) आत्मिक मृत्यु का कारण हो सकता है।

"मैं तो भारी काम में लगा हूँ वहाँ नहीं जा सकता" (6:3)। नहेम्याह अपने शत्रुओं के निमंत्रण का उत्तर स्वीकार करने के लिए अत्यधिक व्यस्त था। जब हम प्रभु के राज्य में व्यस्त होते हैं, तो हम भी "भारी काम" में लगे होते हैं और हमें अपना ध्यान भटकने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। हमें अपनी शिक्षा या सेवा में इतना व्यस्त होना चाहिए कि हम समय बर्बाद करने वाली गतिविधियों के लिए "न" कहें।

"हे परमेश्वर, तू मुझे हियाव दे" (6:9)। नहेम्याह ने प्रार्थना की और कहा कि परमेश्वर उसे "हियाव" दे, या उसके काम में सहायता करे। जब हमें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तो हमें उसी तरह से प्रार्थना करनी चाहिए, कि जो हमें करना है परमेश्वर हमारी उसमें सहायता करे।

"बहुत से यहूदी उसका [तोबिय्याह का] पक्ष करने की शपथ खाए हुए थे (6:18)। कुछ यहूदियों के साथ तोबिय्याह की मित्रता यहूदा की एकता के लिए खतरा बन गई। यह समूह (सम्भवतः अनिच्छापूर्वक) लोगों (और परमेश्वर) के हितों के विरुद्ध में काम कर रहा था। हम कलीसिया में भी ऐसे लोगों का सामना कर सकते हैं जो शैतान का "पक्ष करने की शपथ" खाए हुए हैं। न केवल ऐसे लोग अपनी आत्मा को खतरे में डालते हैं बल्कि सम्पूर्ण मण्डली को भी जोखिम में डाल सकते हैं।

शत्रु की (6:1-14)

सिरिल जे. बार्बर ने टिप्पणी की और कहा कि नहेम्याह के शत्रुओं ने अपना काम प्राप्त करने के लिए पहले तो "*षड्यंत्र* (नहेम्य. 6:1-14) का सहारा लिया, इसके बाद *ताने का* (6:5-9), और अन्त में *धमकी* का (6:10-14)।"[16]

"सबसे बड़ी भलाई" (6:10, 11)

जब नहेम्याह ने शमायाह के घर में प्रवेश किया, तो उसने उससे "बन्द द्वारों" के पीछे "मन्दिर में" भेंट करने की विनती की क्योंकि नहेम्याह के शत्रु "रात में" उसे "घात करने" को आ रहे थे (6:10)। शमायाह की विनती को एक तार्किक योजना

समझा जा सकता था। नहेम्याह ने स्वयं से कहा होता "चूंकि मैं यहूदियों का प्रधान हूँ मेरा कुशल उनकी सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। इसी कारण, चाहे व्यवस्था ऐसे किसी भी व्यक्ति को जो याजक नहीं मन्दिर में प्रवेश करने से मना करती थी, इस अवसर पर यह उचित होगा कि मैं वहाँ पर शरण लूँ ताकि मैं सुनिश्चित कर सकूं कि शहरपनाह का काम पूरा हो जाए।"

कुछ लोग अपने पापों को उचित ठहराने के लिए, आज इस प्रकार का तर्क देते हैं। वे कहते हैं, "व्यभिचार करना या समलैंगिकता में लिप्त होना 'नियमों के विरुद्ध' हो सकता है; परन्तु हम वास्तव में एक दूसरे से प्रेम करते हैं, और प्रेम वैद्य आवश्यकताओं से अधिक महत्वपूर्ण है।" मसीही लोग कई बार यह मानते हैं कि अन्य धार्मिक समूह पवित्रशास्त्र के अनुसार आराधना नहीं कर रहे, परन्तु वे विचार करते हैं सहभागिता "नियमों" से अधिक महत्वपूर्ण है। नहेम्याह ने इन बातों का विचार नहीं किया। उसने घोषणा की और कहा कि वह ("क्या मेरे जैसा मनुष्य भागे?") मनुष्यों से डरता नहीं था बल्कि परमेश्वर का भय ("और मुझ जैसा कौन है जो अपना प्राण बचाने को मन्दिर में घुसे?"; 6:11) मानता था। वह जानता था कि परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता करना प्राणघातक हो सकता था, चाहे कोई भी "सबसे बड़ी भलाई" के विषय में कुछ क्यों न सोचता हो।

हमें नहेम्याह के समान होने की आवश्यकता है। यह सोचते रहने का प्रयास करने के बजाय कि "सबसे बड़ी भलाई" से क्या प्राप्त होगा, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि जो "सबसे बड़ी भलाई" एक मनुष्य इस जीवन में प्राप्त कर सकता है वह परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना और उसकी सेवा करना है, चाहे परिणाम कुछ भी हों।

समाप्ति नोट्स

[1]*हार्पर'स बाइबल कमेन्ट्री*, एडिटर जेम्स एल. मेएस (सैन फ्रांसिस्को: हार्पर & रो, 1988), 382 में राल्फ डब्ल्यू. क्लाइन, "नहेम्याह।" [2]विलियम एच. मोर्टन, "ओनो," में *द इन्टरप्रेटर्स डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल*, एडिटर जॉर्ज आर्थर बटरिक (नेशविल: अबिंगडन प्रेस, 1962), 3:604. [3]उन्होंने LXX और वलगेट का अनुसरण किया है, मेसोरेटिक टेक्स्ट (MT) में पाए जाने वाले इब्रानी शब्द का एक अलग उच्चारण है। (लेसली सी. एलन एण्ड टिमोथी एस. लेनिअक, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमेन्ट्री [पीबॉडी, मेस्साच्यूसेट्स: हेंड्रिकसन पब्लिशर्स, 2003], 118-19.) [4]चूंकि यरूशलेम ऊँचाई पर था, एक व्यक्ति किसी भी दिशा में यात्रा क्यों न कर रहा हो उसे सदैव पवित्र नगर से "नीचे उतरना" या "ऊपर जाना" पड़ता था। [5]चिट्ठी शायद एक पेपिरस के टुकड़े पर लिखी गई थी, परन्तु यह "एक ठीकरे या एक लकड़ी की तख्ती पर अंकित के गई सकती थी" (कीथ एन. शॉविल, *एज्रा- नहेम्याह*, द कॉलेज प्रेस NIV कमेंट्री [जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग को., 2001], 193)। [6]मार्क ए. थ्रोंटविट, *एज्रा-नहेम्याह*, इंटरप्रिटेशन (लूइविल: जॉन नोक्स प्रेस, 1992), 86. [7]एच. जी. एम. विलियमसन, *एज्रा, नहेम्याह*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वॉल्यूम 16 (वाको, टेक्सास: वर्ड बुक्स, 1985), 256. [8]विलियमसन, 247, 249. [9]डेरेक किडनर ने लिखा, "नबी ने अपने प्रस्ताव को एक नबूवत का रूप दिया, आयत के सदृश कोई बात, ताकि इसका रूप इसकी सामग्री के समान सम्मोहक हो" (डेरेक किडनर, *एज्रा एण्ड नहेम्याह*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टमेंट कमेन्ट्रीज [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर. वर्सिटी प्रेस, 1979], 99)। कई संस्करणों

में शमायाह के शब्दों को कविता के रूप में व्यवस्थित किया गया है (NAB; NJB; NJPSV; REB)। [10]शॉविल, 197.

[11]*द एक्सपोजिटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वॉल्यूम 4, *1 राजा-अय्यूब*, एडिटर फ्रैंक ई. गैब्लिन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन पब्लिशिंग हाउस, 1988), 714 में एडविन एम्. यमूची, "एज्रा-नहेम्याह।" [12]इसके अलावा पुराने नियम में और नबियाएँ मरियम, दबोरा और हुल्दा थीं (निर्गमन 15:20; न्यायियों 4:4; 2 राजा 22:14)। वे स्त्रियाँ (नोअद्याह के समान) जिन्होंने झूठी नबूवत की थी उनका वर्णन यहेजेकेल 13:17 में किया गया है। [13]विलियमसन, 248, 261. [14]ये "रईस" (6:17) निस्संदेह कुलीन लोग थे। सम्भवतः वे वही "शासक" और "रईस" थे जिनका सामना नहेम्याह ने पहले किया था (5:7)। [15]एलन और लेनिअक, 118. [16]सिरिल जे. बार्बर, *नेहेम्याह एण्ड डायनेमिक्स ऑफ़ इफ़ेक्टिव लीडरशिप* (नेपच्यून, न्यू जेर्सी: लूजॉस्स ब्रदर्स, 1976), 97.